

कृषि विकास नियोजन : गाजीपुर जनपद (उ०प्र०) का एक प्रतीक अध्ययन

डॉ अजीत कुमार यादव

प्राचार्य गुरुकुल महाविद्यालय पत्थलगांव जिला-जशपुर (छ.ग.)

शोध सारांश-

प्रस्तुत शोध पत्र गाजीपुर जनपद में कृषि विकास स्तर एवं नियोजन से सम्बंधित है। अध्ययन क्षेत्र मध्यगंगा मैदान के उपजाऊ भू-भाग में स्थित होने के कारण यहां पर उपजाऊ एवं जलोढ़ मिट्टी पायी जाती है। क्षेत्र में कृषि सम्बंधित अवस्थापनात्मक सुविधाओं का वितरण सर्वत्र समान नहीं है। फलस्वरूप कृषि विकास का स्तर क्षेत्र के उत्तरी एवं उत्तरी-पश्चिमी भाग में अतिउच्च श्रेणी का एवं उत्तरी-पूर्वी एवं मध्यवर्ती भागों में कृषकों की कृषि के प्रति उदासीनता एवं कृषि संबंधी अवस्थापनात्मक सुविधाओं के आभाव में कृषि विकास का स्तर निम्न श्रेणी का पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास नियोजन हेतु बाढ़ नियंत्रण, जल निकासी, कृषि विविधता, मृदा उर्वरता एवं संरक्षण, सिंचाई के साधनों का विकास एवं सामाजिक वानिकी का नियोजन करके कृषि की उत्पादकता में वृद्धि एवं आय के नये अवसर उपलब्ध होने के कारण क्षेत्र की जनसंख्या के जीवन स्तर को सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

भूमिका – किसी भी प्रदेश के संतुलित विकास में कृषि की समुन्नति आवश्यक है। कृषि विकास का आधार तैयार करती है, तथा प्रदेश को खाद्यान्न की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाती है। कृषि उत्पादन संवर्धन हेतु निर्मित अवस्थापना भावी उद्योगों के लिए भी उपादेय होती है। कृषि उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति करती है।¹ कृषि की उत्पादकता में वृद्धि प्रादेशिक आय को बढ़ाती है। आय की वृद्धि से अन्योन्य वस्तुओं एवं सेवाओं की प्राप्ति के अवसर बढ़ते हैं, जिससे उद्योगों के विकास के साथ-साथ सेवाओं के विस्तार को बल मिलता है। इस प्रकार क्षेत्र के विकास में कृषि आधारभूत तत्व है। बिना इसके संवर्धन के सतत् एवं सम्यक् विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। क्षेत्र के विकास हेतु कृषि संवर्धन विकास नीति का महत्वपूर्ण बिन्दु होना समसामयिक है। इससे जनसंख्या का भरण-पोषण होता है। साथ ही साथ उत्पादन

में वृद्धि से क्षेत्र को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। कृषकों एवं उत्पादकों की बढ़ती आय राष्ट्रीय समृद्धि में सहायक होती है। कृषि में निवेश से रोजगार के अवसर भी बढ़ते हैं। क्रमबद्ध कृषि विकास से अधिक आय की ओर लोग अग्रसर होते हैं तथा धीरे-धीरे कृषित्थर क्षेत्र को कुशल एवं प्रशिक्षित लोग मिलते हैं। वस्तुतः खाद्यान्न की आत्म निर्भरता के बिना प्रदेश का विकास सम्भव नहीं है। अतः कृषि विकास ही ग्रामीण विकास का लक्ष्य एवं प्रमुख आधार है।²

आधुनिक युग में कृषि की उच्च उत्पादकता नवीन निवेशों के प्रयोग पर निर्भर करती है। मुख्य रूप से यह कहा जा सकता है कि भारतीय आधुनिक कृषि का विकास कृषि के नवीनीकरण पर निश्चित है।³ मिलर के अनुसार कृषि की मात्रा में वृद्धि के स्थान पर नवीन साधनों को प्रतिस्थापित किया जा सकता है। भारतीय कृषि व्यवस्था का अंग होने के

कारण जनपद गाजीपुर की प्रमुख समस्या जोतों के आकार का छोटा होना एवं कृषकों का कम शिक्षित होना है। कृषि विकास के परिप्रेक्ष्य में इन अवस्थापन तत्वों की उचित व्यवस्था ही पर्याप्त नहीं है अपितु इनके लाभों के प्रति कृषकों को जागरूक करने और सुविधाओं का लाभ उठाने के सुअवसर प्रदान करने की आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र—गाजीपुर जनपद उत्तर प्रदेश एवं वाराणसी मण्डल के पूर्वी भाग में 25°19' से 25°54' उत्तरी अक्षांश एवं 83°4' से 83°58' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह जनपद पूर्व में बिहार राज्य के बक्सर जनपद से, पश्चिम में जौनपुर, दक्षिण में चन्दौली, दक्षिण-पश्चिम में वाराणसी, उत्तर-पश्चिम में आजमगढ़, उत्तर में मऊ एवं उत्तर-पूर्व में बलिया जनपद से घिरा हुआ है। जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3,377 वर्ग किमी. है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 1.5 प्रतिशत है। इस जनपद की पूर्व-पश्चिम की ओर लम्बाई 89 किमी. एवं उत्तर-दक्षिण की ओर चौड़ाई 59 किमी. है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से गाजीपुर जनपद 5 तहसीलों, 16 विकासखण्डों, 193 न्यायपंचायतों, 1050 ग्रामपंचायतों, 3364 ग्रामों (2665 आबाद ग्राम एवं 699 गैर आबाद ग्राम) में विभक्त है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 36,22,727 है, जिसमें 18,56,584 पुरुष एवं 17,66,143 महिलायें हैं। यहां का औसत जनघनत्व 1072 व्यक्ति/वर्ग किमी, साक्षरता 74.27: एवं लिंगानुपात 951 है।

विधितंत्र – प्रस्तुत शोध पत्र में कृषि विकास स्तर ज्ञात करने हेतु चरों के निर्धारण में द्वितीयक आकड़ों का उपयोग किया गया है। कृषि विकास स्तर हेतु चयनित चरों का

सांख्यिकीय विधि के अंतर्गत निम्नतम विधि का उपयोग करके विकासखण्डों को निम्न श्रेणियों में विभक्त करके विश्लेषण किया गया है।

कृषि विकास के चर – कृषि नियोजन के सम्यक अध्ययन हेतु ग्रामीण विकास का स्तर ज्ञात कर कृषि नियोजन की प्रक्रिया सर्वाधिक उचित एवं न्याय संगत होती है। इस हेतु क्षेत्र में कृषि विकास स्तर का निर्धारण क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप को स्पष्ट करने के लिए विकासखण्ड स्तर पर कृषि विकास प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले प्रमुख चरों को आधार मानकर विश्लेषण किया गया है। वस्तुतः इन्हीं चरों के माध्यम से किसी क्षेत्र के कृषि विकास की रूपरेखा का वास्तविक निर्धारण किया जा सकता है। क्षेत्र के कृषि विकास के निर्धारण में निम्नवत चरों का चयन किया गया है।

कृषित क्षेत्र— कृषि विकास का प्रमुख आधार है। क्षेत्र में औसत कृषित क्षेत्र 76.86: है। यहां वाराचवर विकासखण्ड में 81.78:, मुहम्मदाबाद में 81.49:, विरनों में 80.89: एवं गाजीपुर विकासखण्ड में 67.7: भू-भाग पर कृषि कार्य किया जाता है।

सिंचित क्षेत्र— सिंचित क्षेत्र कृषि उत्पादकता एवं कृषि विकास का आधार है। क्षेत्र का औसत शुद्ध सिंचित क्षेत्र 84: है। यहां मनिहारी विकासखण्ड में 96.90:, विरनों में 95.40: तथा भावरकोल विकासखण्ड में 50.50: भू-भाग सिंचित है।

एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र – बढ़ती हुई जनसंख्या के भरण-पोषण हेतु क्षेत्र में एक बार से अधिक फसलें उगायी जाती हैं। यहां एक बार से अधिक बोये गये क्षेत्र का औसत 62.70: है। जमानियां विकासखण्ड में 87.82: एवं रेवतीपुर विकासखण्ड में 26.21: भू-भाग

पर एक से अधिक बार फसलें उगायी जाती हैं।

प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न उत्पादन – कृषक का प्रमुख लक्ष्य क्षेत्र में उत्पादन की मात्रा में वृद्धि करना जिसके कारण कृषि विकास स्तर को सुनियोजित किया जा सके। क्षेत्र में प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न का औसत 19.11 कुन्तल/हेक्टेयर है। रेवतीपुर विकासखण्ड में 20.52 कुन्तल/हेक्टेयर, सादात में 20.32, कासिमाबाद में 20.26, मनिहारी में 20.18 एवं भांवरकोल विकासखण्ड में प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न उत्पादन 15.72 कुन्तल/हे. है जबकि प्रदेश का औसत खाद्यान्न उत्पादन 19.65 कुन्तल/हे. है।

प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता—प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता ही कृषि विकास का द्योतक है। जिस क्षेत्र में प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता अधिक होगी उस क्षेत्र में कृषि उत्पादन अधिक है एवं जिस क्षेत्र में खाद्यान्न उपलब्धता कम होगी वहां कृषि उत्पादन कम होता है। जनसंख्या के आधार पर भी प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न में अन्तर देखने को मिलता है। क्षेत्र में कुल औसत प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता 836 ग्राम प्रतिदिन एवं 305 कुन्तल प्रतिवर्ष है। यहां जमानिया विकासखण्ड में 1.07 किग्रा. प्रतिदिन एवं 3.91 कुन्तल प्रतिवर्ष, वाराचवर में 964 ग्राम प्रतिदिन एवं 3.56 कुन्तल प्रतिवर्ष कासिमाबाद 918 ग्राम प्रतिदिन एवं 3.35 कुन्तल प्रतिवर्ष एवं गाजीपुर विकासखण्ड में खाद्यान्न उपलब्धता 553 ग्राम प्रतिदिन एवं 2.02 कुन्तल प्रतिवर्ष है।

उर्वरक – मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बनाये रखने तथा बढ़ाने के लिए जिन रासायनिक तत्वों को मिट्टी में मिलाया जाता है, उसे उर्वरक या खाद कहते हैं। उत्पादकता को

बढ़ाने के लिए उर्वरक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्षेत्र में 133.60 कि.ग्रा./हेक्टेयर उर्वरक का प्रयोग किया जाता है। गाजीपुर विकासखण्ड में 203 कि.ग्रा./हेक्टेयर, सैदपुर 194.10, मुहम्मदाबाद 177.30 एवं भदौरा विकासखण्ड में 72.30 कि.ग्रा./हेक्टेयर उर्वरक का प्रयोग किया जाता है।

कृषक एवं कृषि श्रमिक – कृषि कार्य को सम्पादित करने के लिए श्रमिकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्षेत्र में 72.2: जनसंख्या (कृषक एवं कृषि श्रमिक) कृषि कार्य में संलग्न है। मनिहारी विकासखण्ड में 79:ए सादात में 78.8:ए भांवरकोल में 75.90: एवं गाजीपुर विकासखण्ड में 59.10: कार्यशील जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है।

सिंचाई – कृषि पदार्थ के सफल उत्पादन हेतु पौधों की वृद्धि के लिए मृदा में आवश्यक नमी बनाये रखने के लिए सिंचाई की महती आवश्यक है।"4 क्षेत्र में नहरों द्वारा सिंचाई 23.6: भू-भाग पर की जाती है। भदौरा विकासखण्ड में 80: भू-भाग, जमानिया में 77.6:ए रेवतीपुर में 36.3:, बाराचवर एवं भांवरकोल विकासखण्ड में 0.1: भू-भाग पर नहरों द्वारा सिंचाई की जाती है। क्षेत्र में नलकूपों द्वारा सिंचाई प्रमुख रूप से की जाती है। यहां नलकूपों द्वारा सिंचाई 76.3: भू-भाग की जाती है। बाराचवर एवं भांवरकोल विकासखण्ड में 99.9: भू-भाग एवं भदौरा विकासखण्ड में 20: भू-भाग पर सिंचाई की जाती है। क्षेत्र में नलकूपों की संख्या 748 है, जिसमें भांवरकोल में 100, मुहम्मदाबाद में 93, गाजीपुर में 81 एवं जमानिया विकासखण्ड में 14 नलकूप हैं।

कृषि यंत्र – कृषि कार्य में औजारों का महत्व प्रारम्भ से ही रहा है। प्राचीन कृषि औजार अवैज्ञानिक तरीके के ही क्यों न रहे हो, कृषि

विकास का इतिहास समय-समय पर नये औजारों के आविष्कारों के साथ ही जुड़ा रहा है। यन्त्रीकरण के द्वारा श्रम एवं मजदूर में वचत उत्पादन में वृद्धि होती है। इसलिए कृषि कार्य में कृषि यंत्रों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है।

क्षेत्र में कुल हलों की संख्या 5,589 है। यहां जखनियां विकासखण्ड में 1085, मनिहारी में 666, सादात में 597 एवं गाजीपुर विकासखण्ड हलों की संख्या 50 है। क्षेत्र में कुल हैरो एवं कल्टीवेटर की संख्या 13,797 है। करण्डा विकासखण्ड में 2,335, कासिमाबाद में 2,028, रेवतीपुर में 1,800 भदौरा में 1,448 एवं गाजीपुर विकासखण्ड में 228 हैरो एवं कल्टीवेटर हैं।

यहां थ्रेसिंग मशीन की संख्या 8491 है। कासिमाबाद विकासखण्ड में 823, सादात में 819, मनिहारी एवं जखनियां में 818-818 एवं गाजीपुर विकासखण्ड में थ्रेसिंग मशीन की संख्या 265 है। क्षेत्र में कुल स्प्रेयर मशीन की संख्या 423 है। मुहम्मदाबाद विकासखण्ड में 51, रेवतीपुर में 39 जमानियां में 32 एवं करण्डा-सादात विकासखण्ड में स्पेयर मशीन की संख्या 16-16 है। क्षेत्र में बुवाई यंत्रों की

कुल संख्या क्षेत्र में 5,422 है। रेवतीपुर विकासखण्ड में 1678, सैदपुर में 1,308, भदौरा में 847 एवं विरनों विकासखण्ड में बुवाई यंत्रों की संख्या 9 है। यहां ट्रैक्टरों की कुल संख्या 12,338 है। जमानियां विकासखण्ड में 1,139, सादात में 1,090, भदौरा में 1,032 भोंवरकोल में 1,001 एवं करण्डा विकासखण्ड में ट्रैक्टरों की संख्या 363 है।

स्पष्ट है कि क्षेत्र में कृषि विकास को प्रभावित करने वाले चरों के माध्यम से कृषि विकास स्तर ज्ञात किया गया है। कृषि विकास स्तर ज्ञात करने के लिए विकासखण्डानुसार चरों के मूल्यांकन का औसत एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात करके सूत्र द्वारा प्रत्येक चर का ऋबवतम ज्ञात किया गया है।

ऋबवतम त्र र.र-

र त्र विकासखण्डानुसार चरों का मूल्य

र-त्र चरों का औसत मूल्य

प्राप्त ऋबवतम 0 से धनात्मक एवं ऋणात्मक मूल्यांकन तक फैले हैं, जिनका परास 0 से धनात्मक 5.29 और ऋणात्मक 0 से 8.01 है। क्षेत्र में कृषि विकास स्तर को निम्न श्रेणियों में विभक्त करके तालिका संख्या 1.1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या 1.1
गाजीपुर जनपद में कृषि विकास स्तर

क्र.सं.	Z Score	विकास स्तर	विकासखण्डों की संख्या	विकासखण्डों का :
1	> +3.50	अति उच्च	2	12.50
2	+1.75 ls +3.50	उच्च	5	31.25
3	0 ls 1.75	मध्यम	2	12.50
4	0 ls -1.75	मध्यम न्यून	3	18.75
5	> -1.75	न्यून	4	25.00

स्रोत: गाजीपुर जनपद सांख्यिकीय पत्रिका 2010-11

कृषि विकास का क्षेत्रीय प्रतिरूप –

कृषि विकास का स्तर Z Score विधि से ज्ञात कर उसका क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप ज्ञात किया गया है। क्षेत्र के कृषि विकास स्तर को 5 श्रेणियों में विभक्त करके चित्र संख्या 1.1 में प्रस्तुत है।

अति उच्च विकास स्तर – इसके अन्तर्गत क्षेत्र 2 विकासखण्ड कासिमाबाद एवं सादात आते हैं, जिनका विस्तार उत्तरी उच्च भू-भाग एवं उत्तरी-पश्चिमी भाग में हैं। यहां पर कृषित की उपलब्धता एवं सिंचाई के साधनों के विकास के कारण उत्तम तकनीकी यन्त्रों से कृषि का विकास अति उच्च स्तर का है।

उच्च विकास स्तर – इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 5 विकासखण्ड जखनियां मनिहारी, जमानियां मुहम्मदाबाद, बाराचवर सम्मिलित है, जिनका विस्तार उत्तरी उच्च भू-भाग के उत्तरी भाग एवं दक्षिणी उच्च भू-भाग में स्थित है। इन क्षेत्रों में शुद्ध कृषित क्षेत्र शुद्ध सिंचित क्षेत्र एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न उपलब्धता उर्वरक सिंचाई के साधन एवं कृषि यन्त्रों की पर्याप्त उपलब्धता के कारण कृषि विकास का उच्च स्तर है।

मध्यम विकास स्तर – इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 2 विकासखण्ड सैदपुर, देवकली सम्मिलित है, जिनका विस्तार क्षेत्र के उत्तरी पूर्वी गंगा खादर क्षेत्र में है। इन क्षेत्रों में शुद्ध कृषि क्षेत्र, शुद्ध सिंचित क्षेत्र, उर्वरक उपयोग, सिंचाई के साधन एवं प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न उपलब्धता तथा कृषि यंत्रों की सामान्य उपलब्धता के कारण कृषि विकास का स्तर मध्यम स्तर का है।

मध्यम न्यून विकास स्तर—इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 3 विकासखण्ड विरनों रेवतीपुर, मरदह सम्मिलित है, जिनका विस्तार उत्तरी उच्च भू-भाग बांगर एवं निम्न खादर भू-भाग में है। इस क्षेत्र में कृषि यन्त्रों के आभाव में एक निम्न

स्तरीय कृषि दशाओं के कारण मध्यम न्यून कृषि विकास का स्तर है।

न्यून विकास स्तर—इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 4 विकास खण्ड भांवरकोल, भदौरा, करण्डा एवं गाजीपुर सम्मिलित है, जिनका विस्तार क्षेत्र के उत्तरी-पूर्वी भाग में एवं मध्य गंगा खादर के निम्न क्षेत्र में स्थित है। यहां कृषि विकास की दशाएं न्यून स्तर की हैं। इस क्षेत्र में शुद्ध कृषित क्षेत्र की न्यूनता, प्रति हेक्टेयर उत्पादन में कमी सिंचाई के साधनों में कमी एवं कृषि यन्त्रों के अभाव में कृषि विकास का न्यून स्तर पाया जाता है।

स्पष्ट है कि क्षेत्र में कृषि विकास यहां के उत्तरी एवं पश्चिमी भाग में अधिक है। यहां पर कृषिगत सुविधाएं अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है जबकि यहां के उत्तरी पश्चिमी, दक्षिणी एवं उत्तरी पूर्वी भाग में उपजाऊ कृषि भूमि के कारण कृषि का उच्च स्तर है यहां के पश्चिमी भागों में नदियों के कारण बाढ़ प्रभावित होने से खरीफ की फसल छोटे पैमाने पर जबकि रबी की फसल बड़े पैमाने पर की जाती है तथा आधुनिक कृषि यंत्रों के कारण कृषि विकास मध्यम स्तर का है। लेकिन उत्तरी एवं दक्षिणी भाग में कृषि योग्य भूमि के कमी के कारण कृषि का विकास कम है तथा मध्यवर्ती एवं पश्चिमी भागों में कृषिगत सुविधाओं के अभाव में कृषि का विकास न्यून स्तर का पाया जाता है।

कृषि विकास नियोजन – कृषि क्षेत्र के संतुलित विकास का आधार तैयार करती है तथा क्षेत्र को खाद्यान्न की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाती है, जिसमें प्रसंस्करण एवं परिमार्जन द्वारा बढ़ रही मांगों की पूर्ति संभव है। “5 कृषि विकास नियोजन ग्रामीण विकास की दिशा में एक सामयिक एवं सही प्रयास हैं। नियोजन द्वारा

भूमि की प्रत्येक इकाई की अनुकूलतम उपयोग को निर्धारित किया गया है। कृषि विकास नियोजन का उद्देश्य ग्रामीण समाज को इस प्रकार व्यवस्थित करना है, जो परिवर्तित सामाजिक प्राविधिकीय परिस्थिति के अनुकूल समाज के सदस्यों को सर्वाधिक हित के साधन प्रस्तुत कर सके।

प्रस्तुत अध्ययन में कृषि नियोजन हेतु प्राकृतिक, प्राविधिकीय एवं सामाजिक कारकों को महत्वपूर्ण तत्व के रूप में स्थापित करके कृषि नियोजन की रूप रेखा प्रस्तुत की गई इन तत्वों के समन्वित प्रभाव से ही संतुलित विकास के अवधारणा विकसित होती है। क्षेत्र के कृष्येतर रोजगार अवसर में वृद्धि विकास कार्यक्रम की आत्मनिर्भरता, जागरूकता एवं स्थानीय सहयोग, विकास कार्यक्रम नियोजन को महत्वपूर्ण तत्व हैं। क्षेत्र के कृषि नियोजन के महत्वपूर्ण तत्व हैं। यथा प्राकृतिक आपदा नियंत्रण हेतु नियोजन, कृषि नियोजन, कृषिगत विविधता हेतु नियोजन तथा अवस्थानात्मक तत्वों के विकास सम्बन्धी नियोजन के अन्तर्गत किया गया है।

प्राकृतिक आपदा नियंत्रण हेतु नियोजन – प्रस्तुत अध्ययन में जल प्रबन्ध, बाढ़ नियंत्रण एवं जल निकासी आयोजना को आधार बनाया गया है।

जल प्रबन्धन – क्षेत्र के कुछ भागों में जल जमाव की समस्या पायी जाती है। सादात विकासखण्ड के दक्षिणी एवं पूर्वी भाग में, मनिहारी के उत्तरी भाग में, देवकली के उत्तरी-पश्चिमी भाग, जमानियां के नदी तटवर्ती क्षेत्रों रेवतीपुर के कुछ भागों, मरदह एवं विरनों के पश्चिमी भागों में एवं गाजीपुर विकासखण्ड के दक्षिणी-पूर्वी भाग में जल जमाव की समस्या है। इन क्षेत्रों में पाये जाने

वाले तालों को गहरा करके जल संचित कर गेहूं एवं धान के फसलों की सिंचाई करके उत्पादन में वृद्धि द्वारा वहां की जनसंख्या के जीवन स्तर को सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

बाढ़ नियंत्रण – क्षेत्र में बाढ़ मुख्य रूप से गंगा एवं तमसा नदी की सहायक नदियां ही बाढ़ के लिए उत्तरदायी होती है, जिससे वर्षा काल में समीपवर्ती भागों बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। बाढ़ की समस्या के निराकरण हेतु नदियों के तटवर्ती भागों में बांध एवं वृक्षारोपण आवश्यक है।

जल निकासी – जल निकासी की समस्या नगरीय क्षेत्रों में अधिक पायी जाती है। इस समस्या नगरीय क्षेत्रों में अधिक पायी जाती है। इस समस्या के निराकरण के हेतु बाह्य भागों में जो तल पाये जाते हैं, उनसे नलिकाओं को जोड़कर जल संचित कर कृषि एवं अन्य कार्यों (मत्स्यपालन, सिंघाड़ा की कृषि) में प्रयुक्त किया जा सकता है, जिससे वहां के निवासियों को आय के स्रोत प्राप्त हो सकते हैं एवं उनका जीवन स्तर सुखी हो जाता है।

कृषि विविधता हेतु नियोजन – क्षेत्र में कृषिगत विविधता एवं ग्रामीण विकास के लिए कृषि नियोजन एवं परम्परागत तकनीकों में परिवर्तन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कृषि नियोजन के लिए मृदा संरक्षण एवं उर्वरता, भूमि का उपयोग, सिंचाई, खाद एवं उर्वरक, उन्नतशील बीज का प्रयोग, कृषि यंत्रीकरण, शस्यस्वरूप में परिवर्तन उद्यान एवं बागाती कृषि पशुपालन, मत्स्यपालन, भेड़ एवं बकरी पालन रेशम एवं कीट पालन कुक्कुट पालन एवं मधुमक्खी पालन के विकास एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण का होना अनिवार्य है।

मृदा उर्वरता एवं संरक्षण – जल प्रबन्ध, जल प्रवाह सुधार बाढ़ नियंत्रण तथा शस्यानुक्रम का

प्रत्यक्ष प्रभाव मृदा उर्वरता पर परिलक्षित होता है। क्षेत्र के पूर्वी एवं उत्तरी भागों में जल प्लावन की समस्या के कारण मृदा उर्वरता प्रभावित हो रही है। मृदा संरक्षण मृदा की दशा समयानुसार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न होती है। अतः नियोजित भूमि उपयोग इस दिशा में सर्वप्रमुख युक्ति है।

भूमि उपयोग नियोजन – क्षेत्र के 76.86: भू-भाग पर कृषित भूमि 13.77: अकृषित 5.4: कृष्य बंजर, 1.27: वन एवं 1.58: उद्यान चारागाह बाग बगीचों का विस्तार पाया जाता है। क्षेत्र के कुल कृषित क्षेत्र के 62.7: भू-भाग पर द्विशस्यीय फसलों का उत्पादन किया जाता है। क्षेत्र में समुचित जल निकासी, उत्तम सिंचाई व्यवस्था, रासायनिक उर्वरक, उन्नतशील बीज, आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रयोग एवं फसलचक्रों में परिवर्तन द्वारा द्विशस्यीय क्षेत्र में वृद्धि की संभावना है। मिश्रित एवं बहुमुखी भूमि उपयोग की आयोजना से कृषिगत गहनता उत्पादकता एवं विविधता में विकासजन्य स्थिति प्राप्त होती है। भूमि का समुचित उपयोग करके निवासियों का जीवन स्तर रहन सहन खान-पान आदि का विकास किया जा सकता है।

सिंचाई – क्षेत्र के 84.00: भू-भाग सिंचित है। क्षेत्र के उत्तरी-पश्चिमी एवं दक्षिणी-पूर्वी भागों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने से उत्पादन में वृद्धि द्वारा द्विफसलीय कार्यक्रम सफल बनाया जा सकता है।

खाद एवं उर्वरक – जनसंख्या वृद्धि एवं अधिकतम लाभ प्राप्ति की प्रवृत्ति से दिन-प्रतिदिन भूमि पर उत्पादन में वृद्धि के दबाव की स्थिति बनी हुई है। संतुलित मात्रा में खाद के प्रयोग द्वारा भूमि संरक्षण एवं उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

क्षेत्र में गोबर संयंत्र को प्रोत्साहित करके खाद के रूप में प्रयुक्त किया जाय।

उन्नतशील बीजों का प्रयोग – कृषि के क्षेत्र में आयी क्रान्ति से नये बीजों एवं उनकी उन्नत किस्म के बीजों का निर्माण किया गया जो प्रति हेक्टेयर उत्पादन में वृद्धि कर सके जिससे उनका जीवन स्तर उच्चकोटि का हो जायेगा। क्षेत्र में उन्नतशील किस्म के बीजों का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है, जिससे आय में वृद्धि हो रही है। साथ ही यहां फसल चक्र में हुए परिवर्तन से उत्पादन में वृद्धि के आसार दिख रहे हैं।

सामाजिक वानिकी – सामाजिक वानिकी का उद्देश्य न केवल ईंधन एवं इमारती लकड़ी जुटाना है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में चारे के आपूर्ति एवं बाढ़ को रोकने के लिए बाधों पर झाड़ियों का प्रयोग तथा मृदा अपरदन को रोकने के लिए वृक्षारोपण किया जाता है। गंगा एवं कर्मनाशा नदियों के तटवर्ती भागों में सघन झाड़ीदार वृक्ष पाये जाते हैं। फलस्वरूप इस क्षेत्र में सामाजिक वानिकी को प्रोत्साहित किया जाता है।

पशुपालन – अध्ययन क्षेत्र दुग्ध उत्पादन में अग्रणी है। यहां दुधारू किस्म के गाय, भैंस, मांस के लिए बकरी-सुअर, वन के लिए भेड़ पालन कार्य बड़े पैमाने पर किया जा रहा है परन्तु क्षेत्र के मध्यवर्ती एवं दक्षिणी भागों में व्यवसाय के प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

क्षेत्र में तालाबों एवं तालों को गहरा करके बड़े पैमाने पर मत्स्य पालन का कार्य करने से आय के स्रोत प्राप्त होने से उनका जीवन स्तर उच्च हो सकता है, क्योंकि क्षेत्र में जल जमाव सदैव बना रहता है। यहां रेशम कीट का पालन शहतूत के वृक्षों पर किया जा रहा है। यदि इस उद्योग को प्रोत्साहन किया जाए तो यहां रेशम



का उत्पाद बड़े पैमाने पर करके आय में वृद्धि हो सकती है।

प्रायः कृषि विकास से तात्पर्य कृषि उत्पादकता में वृद्धि से लिया जाता है। कृषि उत्पादक में यह वृद्धि वैज्ञानिक एवं तकनीकी विधियों के समावेश के फलस्वरूप संभव हुई है। यांत्रिक रूप से प्राप्त हो और पर्यावरण का स्वरूप भी विकृत न हो। कृषि के स्वरूप को निर्धारण करने वाले सभी कारकों को यह योजनाबद्ध ढंग से प्रयोग किया जाय। स्पष्ट है कि क्षेत्र की 92.3: जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है, जिनके जीवन यापन का आधार कृषि है। यदि क्षेत्र के दक्षिणी भागों में कृषि सम्बन्धी अवस्थापनात्मक सुविधाओं का विकास करके

कृषि के पूर्व कृषि विकास को उत्पादकता में वृद्धि स्थापन्न मानी जा रही है। परन्तु आज उत्पादकता में होने वाली वृद्धि को अपेक्षाकृत कृषि विकास का अभिप्राय उत्पादकता से है, जिसका लाभ समाज के सभी वर्गों को समान

द्विफसलीय क्षेत्र में वृद्धि से उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। कृषि नियोजन के माध्यम से क्षेत्र में कृषि विकास के नियोजन लक्ष्य पूर्ण होने से जीवन स्तर में सुधार होगा एवं क्षेत्रीय आय के साथ राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने से लोगों को आय के नये अवसर उपलब्ध होंगे।

सन्दर्भ

1. आर्य राजेश कुमार (1999), मालवा पठार (मध्य प्रदेश) में कृषि आधारित उद्योग एवं ग्रामीण विकास, अप्रकाशित शोध प्रबंध भूगोल विभाग दी.द.उ. गोरखपुर वि.वि. गोरखपुर पृष्ठ संख्या 7-9
2. यादव, अजीत कुमार (2008), सेवा केन्द्र एवं समन्वित ग्रामीण विकास: जनपद गाजीपुर का एक प्रतीक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर, पृष्ठ संख्या 89
3. Pandey, J. N. (1985) : A Strategy for Rural Development in V.K. Srivastav Commercial

Activities and Rural Development in South Asia; pp 441-444.

4. शुक्ला अर्पणा (2006), रायबरेली जनपद में कृषि का विकास, अप्रकाशित शोध प्रबंध कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर पृष्ठ संख्या 221-222
5. यादव, राजेश कुमार एवं पाण्डेय जगतनारायण (2005)रू ग्रामीण विकास हेतु कृषि नियोजन मनकापुर तहसील (गोण्डा जनपद) का एक प्रतीक अध्ययन, उ.भा. भू.प. 2005 जून दिसम्बर पृष्ठ संख्या 1-7